२१वीं सदी के नेता

भारत के कुछ नेता
राजनीति नहीं गुस्ताख़ नीति करते हैं
कहने को तो वो अभिजात्य वर्ग हैं
पर जुबान से गंदगी उगलते हैं
ना है पद की गरिमा, ना देश का सम्मान करते हैं।

सरेआम महिला अंगवस्त्र के नाम पर
अपनी सोच प्रकट करते हैं
कोई कहता गलती हो जाती लड़को से
सिर्फ बलात्कार पर
केस जो फांसी तक जाते हैं।

क्यों कोई नहीं पूछता इन गद्दारों से
क्या धर्म है तुम्हारा
नियत क्या है उस धर्म की
क्या बेटी, बहन है तुम्हारे घर भी
हैं, तो बाकई वो ख़ौफ में हैं?

कोई क्यों नहीं पूछता
सत्ता में आए तो नीति क्या होगी तुम्हारी
जो महिलाएं तुम्हारी जुबान में सुरक्षित नहीं
क्या तुम्हारे शासन में हो पायेगी?

कोई तो पूछो इनसे
कितने काबिल हो तुम
और तुम्हारा लक्ष्य क्या है
कैसे देदे अपना कीमती वोट
तुम्हारी नपुंसक सोच को।

पहले जाओ देखो अपनी औकात
झांको अपने गिरेवाँ में
बदलो अपने घटिया विचार
ख़ुद पर शासन करो
अपना प्रशासन ठीक करो।

हम तो जनता हैं
तुम जैसे लोगों को बिगाड़ते हैं, बनाते हैं
वक़्त पड़े तो, महिलाओं के लिए
तुम जैसो को ही फाँसी पर भी चढ़ाते हैं
तुम नेता हो तो नेता रहो
हम अपनी सरकार ख़ुद बनाते हैं।

चन्दा यादव
बी.ए. (ऑनर्स)– राजनीति विज्ञान
शैक्षणिक सत्र : २०११-१४
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।